TOPIC -
Teacher Education and Communication

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में माना गया है। अधिगम प्रेरणा का इसके साथ विपरीत सह सम्बन्ध दिखाई देता है। अर्थात् सम्प्रेषण अन्तराल जितना कम होगा, छात्र छात्रायें उतना ही अधिक सीखने के लिए प्रेरित होंगे क्योंकि वे अध्यापक / अध्यापिका द्वारा कही जाने वाली बातों को ठीक से ग्रहण कर पायेंगे। इसके साथ ही उनकी धारण शक्ति भी बढ़ेगी और शिक्षण के उद्देश्यों एवं उपलब्धि में वृद्धि होने की सम्भावना बनेगी। संकल्पना शिक्षण में सम्प्रेषण अन्तराल का अधिक होना संकल्पना सम्प्राप्ति के लिए बाधक सिद्ध होता है। रोचक ढंग से सार्वभौमिक शिक्षण (व्यापक स्तर पर समूह के लिए) हेतु सम्प्रेषण उपकरणों का उपयोग व प्रयोग करना जरूरी माना जाता है। जैसे - यदि कक्षा का आकार बड़ा न हो (छात्र - छात्राओं की संख्या 80 या अधिक होने की स्थिति में) तो अवश्य ही उत्तम श्रवण व्यवस्था के लिए (श्रव्य अन्तराल को कम करने के लिए) ध्वनि विस्तार यन्त्र का प्रयोग करना होगा अन्यथा पीछे बैठे हुए छात्र - छात्राओं को अध्यापक/अध्यापिका के कथन या वाक्य ठीक से नहीं सुनाई देगा। वैसे ही श्यामपट्ट के स्थान पर प्रकाशित स्केचपैन बोर्ड आदि का प्रयोग करना उपयुक्त रहेगा। अतः कहा जाता है कि अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में जनसंचार के साधन सम्प्रेषण अन्तराल को कम करने के लिए प्रयुक्त किये जा सकते हैं।

सम्प्रेषण अन्तराल कक्षाकक्ष परिस्थितियों के अलावा भी प्रशासक / प्रबन्धक एवं छात्र - अध्यापक के मध्य भी सम्भव है। विद्यालयीय अधिकारी

Scanned with CamScanner